Padma Shri



Dr. Bettina Sharada Baumer

Dr. Bettina Sharada Baumer is an internationally known scholar on Indology, Indian Art and Aesthetics, with special focus on 'Kashmir Shaivism' and the intellectual, spiritual and cultural traditions of Kashmir.

2. Born on April 12, 1940 in Salzburg (Austria), Dr. Baumer completed her University studies in Philosophy, Indology and Religious Studies from the Universities of Salzburg, Vienna, Rome and Munich and her Ph.D. at the University of Munich (Germany) in 1967. Presently, she is serving as National Fellow at the Indian Institute of Advanced Study, Shimla, and Director, Samvidalaya, Abhinavagupta Research Library, Varanasi. She has been engaged for decades in interreligious dialogue and has made her contribution in the academic, social and spiritual fields.

3. With the award of a Scholarship from the Government of India, Dr. Baumer came to Varanasi for post-doctoral research at Banaras Hindu University. She also served as a Lecturer at the same University, and as Assistant and Lecturer in Indology at the University of Vienna. In 1997 she was awarded 'Habilitation' (qualification for Professorship) by Vienna University, in the field of Religious Studies. She taught at the Universities of Vienna, Berne and Salzburg as Visiting Professor. In 1987 she became associated with the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) and started the Varanasi Branch Office (now Eastern Regional Centre), where she served as Honorary Coordinator for 9 years. She also served as Research Director of Alice Boner Institute for Fundamental Research in Indian Art, Varanasi. Her field work brought her for over 20 years to Odisha to research on the temples and religious traditions. Since 1986 she came in close association with the tradition of Kashmir Shaivism, which continues to be her main focus of study, teaching and publication. From 2003 she became Visiting Professor and then Fellow at the Indian Institute of Advanced Study, Shimla.

4. In 2011 Dr. Baumer received Indian citizenship. Her publications include a number of translations of Sanskrit texts into German and English, besides editing and contributing to two major series of IGNCA, the Kalatattvakosa and Kalamulasastra. She has authored and edited 22 books and about 80 research articles.

5. Dr. Baumer was awarded Honorary Doctorate in 2002 from the University of Salzburg (Austria), the first woman to receive it from the Faculty of Theology in 380 years. the Austrian Government conferred on her the "Golden Cross of Honour for Science and Art, 1st Class" in 2012.



डॉ. बेत्तीना शारदा बौमर

डॉ. बेत्तीना शारदा बौमर भारत विद्या, भारतीय कला एवं सौंदर्यशास्त्र की एक अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान हैं, जिनका ध्यान मुख्य रूप से 'कश्मीर शैववाद' तथा कश्मीर की बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक परंपराओं पर केन्द्रित रहा है।

2. आपका जन्म अप्रैल 12, 1940 को साल्ज़बर्ग (आस्ट्रिया) में हुआ। आपने साल्ज़बर्ग, वियना, रोम और म्यूनिख़ विश्वविद्यालयों से दर्शन-शास्त्र, भारत विद्या तथा धार्मिक अध्ययनों में अपना विश्वविद्यालय अध्ययन पूर्ण किया तथा वर्ष 1967 में म्यूनिख़ विश्वविद्यालय (जर्मनी) से अपनी पीएच.डी. पूरी की। सम्प्रति, आप इंडियन इंस्टीट्यूट ऑव एडवांस्ड स्टडी, शिमला में नेशनल फैलो तथा समविद्यालय, अभिनवगुप्ता अनुसंधान पुस्तकालय, वाराणसी की निदेशिका हैं। आप दशकों से अंतर-धर्म वार्ताओं में शामिल रही हैं तथा शैक्षणिक, सामाजिक और अध्यात्म के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है।

3. भारत सरकार से छात्रवृत्ति प्राप्त हो जाने के बाद आप पोस्ट-डॉक्टरोल शोध हेतु बनारस हिन्द विश्वविद्यालय आईं। आप उक्त विश्वविद्यालय में व्याख्याता तथा वियना विश्वविद्यालय में भारत विद्या की सहायक और व्याख्याता भी रहीं। वर्ष 1997 में वियना विश्वविद्यालय द्वारा आपको धार्मिक अध्ययनों के क्षेत्र में 'हैब्लिटेशन' (प्रोफ़ेसर पद के लिए अर्हता) प्रदान किया गया। आपने वियना, बर्न तथा साल्ज़बर्ग विश्वविद्यालयों में अतिथि प्रोफ़ेसर के रूप में शिक्षण-कार्य किया। वर्ष 1987 में आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आई जी एन सी ए) से जुड़ी तथा वाराणसी शाखा कार्यालय (अब पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र) आरंभ किया, जहां आप 9 वर्षों तक मानद् समन्व्यक रहीं। आप भारतीय कला के बुनियादी अनुसंधान को समर्पित एलिस बोनर संस्थान, वाराणसी की अनुसंधान निदेशिका के पद पर भी रहीं। अपने क्षेत्र कार्यों के सिलसिले में मंदिरों तथा धार्मिक परंपराओं पर शोध करने के लिए आप 20 वर्ष से अधिक समय तक ओडिशा में रहीं। वर्ष 1986 के बाद आप कश्मीर शैववाद की परंपरा के निकट आईं, जो आपके अध्ययन, शिक्षण और प्रकाशनों का केन्द्र-बिन्दु बना रहा है। वर्ष 2003 से आप इंडियन इंस्टीट्यूट ऑव एडवांस्ड स्टडी, शिमला में अतिथि प्रोफ़ेसर और तत्पश्चात् फैलो रही हैं।

4. वर्ष 2011 में आपको भारतीय नागरिकता प्राप्त हुई। आपके प्रकाशनों में आई जी एन सी ए की दो प्रमुख श्रृंखला, कलातत्वकोश और कलामूलशास्त्र, का संपादन और उनमें योगदान के अतिरिक्त अनेक संस्कृत ग्रन्थों का जर्मन और अंग्रेज़ी में अनुवाद शामिल हैं। आपने 22 पुस्तकों तथा लगभग 80 शोध लेखों का लेखन और संपादन-कार्य किया है।

5. आपको साल्ज़बर्ग विश्वविद्यालय (आस्ट्रिया) द्वारा वर्ष 2002 में मानद् डाक्टोरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया और इस प्रकार से आप 380 वर्षों में धर्मशास्त्र संकाय से उक्त सम्मान प्राप्त करने वाली पहली महिला बन गईं। आस्ट्रिया सरकार ने वर्ष 2012 में आपको "गोल्डन क्रास ऑव ऑनर फॉर साइंस एंड आर्ट, फर्स्ट क्लास" से सम्मानित किया।